उपन्यास समीक्षा - लव@लॉकडाउन

लव@लॉकडाउन - प्रेम को क्वारनटाईन नहीं किया जा सकता

उपन्यास लव@लॉकडाउन अंग्रेजी भाषा में लिखा गया उपन्यास है जिसे प्रो॰ नवीनकुमार मेहता , डा स्वर्णिमा मेहता , राजनिधि मेहता और सुनीधि मेहता ने संयुक्त रूप से लिखा है | उपन्यास वैश्विक महामारी कोरोनाकाल के समय मानवीय जीवन की त्रासदियों के बीच पारिवारिक रिश्तों की गहराई और प्रेम की अग्निपरीक्षा पर है | उपन्यास का कथानक दो दंत चिकित्सकों नेहा और अभिजीत के इर्द गिर्द घूमता हैं जब दोनों विवाह बंधन में बंधने का निर्णय लेते हैं | विवाह की तैयारियों के पहले ही महामारी कोरोना का आतंक देश में फैलने लगता है और पहले अभिजीत कोरोना की चपेट में आ जाता है और अस्पताल में उपचार के दौरान अभिजीत से मिलने की सभी को मनाही है | ऐसे में नेहा सबके विरोध के बावजूद अभिजीत की सेवा अस्पताल में रहकर ही करती है और अभिजीत को मौत के मुंह से खींच लाती है मगर यह सब करते हुए नेहा भी कोविड का शिकार होकर अस्पताल पहुंच जाती हैं |

अस्पताल में नेहा की देखभाल दो नर्स करती हैं और कुछ समय बाद नेहा ठीक हो जाती है | दोनों नर्स का शुक्रिया कहने के लिए नेहा अस्पताल फोन लगाती है तो पता चलता है कि एक नर्स कोरोना का शिकार होकर कालकवलित हो गई है दूसरी नर्स पूजा को कोरोना के बाद ब्लैक फंगस हो गई है | नर्स पूजा को ब्लैक फंगस हो जाने से उसका मंगेतर राजू अब उससे शादी करने में हिचकिचा रहा है और उसे देखने अस्पताल तक नहीं जा रहा है क्योंकि उसे उसके ही साथ काम करने वाले मित्र संजू ने भडका दिया है कि पूजा का चेहरा ब्लैक फंगस के इलाज के दौरान बिगड़ जाएगा | अभिजीत और नेहा को जब यह पता चलता है तो वह पूजा के मंगेतर राजू को समझाते हैं | उधर पूजा के इकतरफा प्यार में पागल संजू ,

अभिजीत पर हमला कर उसे फिर से अस्पताल पहुंचा देता है मगर अंत में नेहा और अभिजीत सब ठीक कर लेते हैं | उपन्यास के संवाद प्रभावी हैं और भाषा आकर्षित करती है | मुख्य पात्र नेहा और अभिजीत का चरित्रचित्रण उत्तम हुआ है | उपन्यास लव@लॉकडाउन मनोरंजक है और पाठकों से जुड़ता है |

उपन्यास का सार यह है कि प्रेम सभी बाधाओं को पार कर विजयी होता है और प्रेमियों के बीच शंका ,संदेह उत्पन्न कर उन्हें अलग करने की कोशिशें भी नाकामयाब हो जातीं हैं | उपन्यास आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है और मानवीय संबंधों और जीवन की जटिलताओं को समझने में मदद करता है | उपन्यास इस बात की ताकीद करता है कि प्रेम का अर्थ किसी को पाना नहीं है किन्तु उसमें खो जाना है | प्रेम हमें त्याग ,तपस्या और देना सिखाता है | जिससे हम प्यार करते हैं उसके जीवन के सारे दुखों को हमें दूर करना चाहिए और ऐसा प्रयास करें कि उसके जीवन में आने वाली समस्याएं , उसके सामने आने से पहले ही समाप्त हो जाएँ | उपन्यास का सन्देश है कि प्रेम को क्वारनटाईन नहीं किया जा सकता |

-समीक्षक- साहित्यकार
डॉ हरीश कुमार सिंह
अध्यक्ष
मालवा लोक कला संस्कृति संस्थान, उज्जैन
मोबाइल नंबर-*9425481195*